E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(1): 73-74
Received: 05-11-2019
Accepted: 16-12-2019

डॉ. गीता कुमारी
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, पूर्व गवेषिका विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. गीता कुमारी
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, पूर्व गवेषिका विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

'पीयर गुलाब छल', उपन्यासमे नारी चित्रण

डॉ. गीता कुमारी

सारांशः
जीवकान्त मैथिली साहित्यक एकटा चिरपरिचित नाम थिक जे खास शैलीक कारणे चिन्हल जाइत छथि। ओना ओ अपनाकें कवि मानैत रहलाह, मुदा हुनक कलम कथो पर चलल आ उपन्यासो पर। जखन जे हिनक प्रकाशित भेलनि, तखन से हिनका लोक मानैत गेलनि। जीवकान्त कविताक अतिरिक्त कथा, उपन्यास ओ बालसाहित्य प्रचूरमात्रामे लिखलनि आ सभ क्षेत्रमे समान रूपसँ यश प्रतिष्ठा अर्जित कयलनि।

प्रस्तावनाः
एतय हम हिनक 'पीयर गुलाब छल' उपन्यास पर चर्चा करब। एहि उपन्यासमे ग्रामीण भारतवर्षक जमीनी वास्तविकताकें प्रदर्शित कयल गेल अछि। एहि उपनयास मध्य सामाजिक आ ग्रामीण वातावरणक अत्यंत सजीव चित्रण भेल अछि। ई उपन्यास 1971ई. मे प्रकाशित भेल, जे प्रेममूलक आ नायिकाप्रधान उपन्यास थिक, जाहिमे तत्कालीन मैथिल समाजमे स्त्रीक भऽ रहल शोषणकें उद्घाटित करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। एकर कथावस्तु शुरू होइत अछि एकटा गामसँ जतय सावित्रीक बाबू अपन परिवारक गुजर–बसर करैत छल। ओहि गामक मुखिया माताप्रसाद वैदक गृहस्थी बसेबामे सहायक भेलाह। परिणामस्वरूप दुनू परिवारमे घनिश्ठता बढ़ैत अछि। बच्चों सबमे मेलमिलाप रहैक। किछु दिनक बाद माताप्रसादक बेटा मदन आगू पढ़बाक लेल शहर चऽल आइत अछि ओतहि वैदक बच्चा सभ गामे रहि जाइत छैक। एहि उपन्यासमे सावित्रीक संग–संग ओकर मायक चरित्रकें सेहो बड़ प्रभावी ढंगसँ चित्रांकन कयल गेल अछि। सावित्रीक माय आ माताप्रसादमे बड़ आवेश छल। माताप्रसाद हुनका सोना भौजी आ ओ मुखियाकें सिनेहसँ मोती बौआ कहैत छथि। सावित्रीक माय अपन सुख–सुविधाक लेल किछुओ कऽ सकैत छल। ओहि समयमे समाजक जे परिदृश्य छल से आइसँ बड़ भिन्न छल, मुदा सावित्रीक माय सनक स्त्री समाजमे कमे भेटैत अछि। ओ जनैत छल जे हमर सब मनोरथ बैद सऽ पूरा नहि भऽ सकैत अछि, तें ओ मुखियाक मुँह धेने रहैत छल।
समयक संगे सब किछु बदलल। वैद आ मुखियाक बच्चा सब आब पैघ भऽ गेलै। सावित्री आब देखबामे बेस सुंदर लगैत अछि। ओ अपन दिन–दुनियामे प्रसन्न अछि। एम्हर सीतानाथ चाउर–दालिकें दोकान खोलि कऽ अपन परिवारक जीविका चलबैत अछि, मुदा ओ अपन स्थिति सऽ प्रसन्न नहि अछि। सदिखन ओकरा चिनता खेने जाइत छै, जे हमर बियाह कोना हैत। ई दोकानो मुखिया ककाकें छनि, पढ़बो–लिखबो नहि कयलहुँ जे कतो बाहरो कमबितहुँ। एहन बरकें कोन बाप अपन बेटी देतै। एहि सभक बीचमे सीतानाथ, बिन्देसर कनियाकें जखन देखैत अछि तऽ ओकर व्याकुल मोनकें किछु शान्ति भेटैत छै।
इम्हर सावित्रीक जीवनमे सुखद प्रेमक प्रवेश मदनक रूपमे भेलै। मदन जखने गाम अबैत अछि, तखनेसँ सावित्रीकें देखबा लेल व्याकुल भऽ जाइत अछि। जखन सावित्री आ मदन पहिले–पहिल एक–दोसराकें देखैत अछि तँ देखिते रहि जाइत अछि। मदन आश्चर्यचकित होइत बजैत अछि–
मदन कनेक कालक बाद दौहरौलकैक, ''एकटा गुलाब हमरा रूमालपर काढ़ए पड़तौ, आ पीयर तागसँ भरए पड़तौ। हमरा पीयर गुलाब नीक लगैये। हम कहियो कहने रहियौ ने जे पीयर गुलाब हमरा नीक लगैये''[1]
सावित्रीक सुन्दरता पर मोहित मदन सब दिन नव–नव बहाना बनाकऽ सावित्रीकें देखबा लेल, ओकर अँगना जाय लागल। एतय जीवकान्त मनोवैज्ञानिक जकाँ मनुक्खक भीतर जे अर्न्तद्वन्द्व चलैत छै तकरा नीक जकाँ उद्घाटित कयलनि अछि। सब मनुष्यमे दू गोट मोन होइत अछि आ ओ आजीवन एहि द्वन्द्वमे पिसाइत अपन जीवन बितबैत अछि। जीवकान्त सावित्रीक दोसर मोनक नामकरण सविता सँ करैत छथि आ सविताक माध्यमे ओ सावित्रीक मोनक अन्तर्द्वन्द्वकें देखेबाक प्रयास करैत छथि। स्वभावतः दुनू मोन एक–दोसर सऽ भिन्न होइत अछि, एक पूरब आ दोसर पश्चिम। सविता सदिखन मदनक संग रहय चाहैत अछि, ओकरा कोन लोज कै देखतै ओकरा एतबा नै ओ सावित्रीकें सेहो उकसबैत अछि जे ओ अपन मोनक बात सुनय। कतेक बेर सावित्री खौझाँ कऽ सवितासँ कहैत अछि–

''भाग, हमर संग छोड़ धोछी।'' सविता कहलकैक, ''उहुँक! एतेक सस्ता नहि अछि सविता। सबितरी, हम तोहर मोन छियौ, तोहर दोसर मोन। जे कोनो बातसँ मना कए देलापर खबखबाकें उठैत छैक। तों नेना छलें, आब समर्थि भेलें, बूढ़ि हेबें। मुदा हम ओहिना छी आ ओहिना रहब। हम तोहर संग नहि छोड़बौ। एक्के दिन हम तों माटिमे मिलब। मुदा संग नहि छूटत।''(2)

सावित्री मदनसँ प्रेम तऽ करैत अछि, मुदा ओ अपन प्रेमकें सबसँ नुका कऽ अपन मोनमे राखऽ चाहैत अछि। ई प्रेम पल्लवित–पुष्पित होइसँ पहिने दहा–भसिया गेल। सावित्रीकें जीवनमे आयल ई दुखद मोड़ परिस्थितिजन्य छल। सीतानाथ द्वारा बिन्देसरक कनियाँकें लऽ कऽ भगनाय, आ तकर परिणामस्वरूप पंचक अनर्गल निर्णय सावित्रीक जीवनके छहोछित कऽ दैत अछि।

''बैदिन किए? बैदक बेटिया सियान छै।'' राम–राम! कुमारि कन्याक विषयमे एना नहि बाजी। मुखियाजी कहलथि, ''हौ तर धरती आ ऊपर असमानोक डर रखबाक चाही। कुमारी कन्या गामक इज्जति थिकै''

''खूनक बदला खून''

आ सभामे हहारो पड़ि गेल।''(3)

अंततः पंचक निर्णय होइत अछि जे सावित्रीकें बिना बियाहे बिन्देसरक घरमे रहय पड़तैक। सावित्री अनकर पापे पपियाहि बनि गेल। सावित्री जखन ई बात सुनलक तऽ ओ पाथर भऽ गेल ओकरा किछु ने फुराय जे आब ओ की करत। ओकर स्थिति थालमे फँसल ओहि जानवर जकाँ भऽ गेलै, जे जतेक हाथ–पैर मारैत अछि ओ ओहिमे आओर फँसल चल जाइत अछि। सविता, सावित्रीकें उकसबैत अछि जे ओ आत्महत्या कऽ लिऽय, मुदा सावित्री जीबऽ चाहैत अछि। ओ मदन संग रहय चाहैत अछि। सावित्री, सवितासँ विकल भऽ कऽ कहैत अछि–

''तों कहने छलें कहियो जे तों मदन संग चल जयबें। चल ओकरा पूछिऐक।''

सविता कहलकैक, ''मदन तोरा गछतौ? आ गछियो लेतौ, तँ ओकरा हेतौ बचाओल? ओकर बाप जे मुखिया छै, तकरा तँ बचाओल हेबे ने करतै, आ ओ छोड़ा की तोरा बचौतहुँ? (4)

एत जीवकान्त समाजक भीतर नुकायल दुर्भावनाकें अपन लेखनी द्वारा उघाड़बाक सफल प्रयास कयलनि अछि। सविता, सावित्रीकें बुझबैत अछि जे आब ई गाममे कियौ ने अछि जे तोहर रक्षा कऽ सकतौ, सावित्री आब तों किया जीबै छे। सविता, सावित्रीकें ओहि रातिक घटनाक मोन पाड़ैत अछि–

''सबितरी, तो जीबैत कहाँ छें? जे जीबैत अछि, से देहपर लत्ता नहि लपेटैत अछि। जे मरि गेल अछि, तकरा डाहिये देब नीक। तों जीबैत कहाँ छें? तों तँ ओही राति मरि गेलें। ओही राति। उतराक झटकैत रातिमे जखन तोहर तरबामे चुट्टी कटने रहौ तोहर माय, तखने तों मरि गेलें।''(5)

सावित्री, सविताक बात सब सुनि हताश आ निराश भऽ जाइत अछि। सावित्री एकान्त शून्यमे तकैत सहसा बाजि उठैत अछि–

''जनै छें सविता ओहि राति ओ मनसाकें छल? ओ छल मोती काका।''

''सविता ठोर ऐंचिकें सावित्रीक मुँह दूसि लेलक, तों एतबे जनैत छें! लोक सभ की बजैत छै, से जनैत छही?'' सविता मुँह दूसिते कहलकैक, ''लोक बजैत छै जें सबितरी बेंदक नहि, मुखियाजीक बेटी थिकै।''(6)

ई बात सुनिते सवित्री घामे–पसीने भऽ जाइत अछि। लगले सावित्री अपन देह पर नुआ लपटऽ लगैत अछि। ओकर आँखिक नोर आब सुखा गेल छलैक। जखन सभटा नुआ लपेट लैत अछि, तँ भरि बोतल तेल अपन देह पर ढारि लैत अछि। सविता, ओकर देहमे पैसी जाइत छैक आ दुनू एकाकार भए जाइत अछि। ओहि घरक धधरासँ चिराइन गन्ध निकलैत अछि जाहिमे एकटा पीयर गुलाब जरि रहल अछि आ जरि जाइत अछि।

एहि उपन्यासमे जीवकानत मनुक्खक सहजात प्रवृत्ति जेना आशा, अभिलाषा, निराशा, महत्वाकांक्षा आ वासनाक चित्रांकन एक गोट सफल मनोवैज्ञानिकक रूपमे कयलनि अछि। ई उपन्यास स्त्रीक अर्न्तवेदनाक कथा कहैत अछि, जाहि मध्य खण्डित विश्वास, कुंठा, अनास्था ओ अव्यवस्थाक यथावत चित्रण भेल अछि। हिनक प्रसंग देवकान्त झा कहैत छथि–

''बेकारीक समस्या पर सृजित जीवकान्तक ''पीयर गुलाब छल'' युगक सजीव चित्रणक संग एक विचारोत्तेजक उपन्यास थिक जे ग्रामीण भारतवर्षक जमीनी वास्तविकताकें प्रदर्शित करैत अछि।''(7)

जीवकान्त दूरदर्शी छलाह, कियैक तँऽ हुनक उपन्यासमे जे सामाजिक परिदृश्य अछि ओ वर्तमान समयमे कमोवेश ओहिना अछि। स्त्रीक शोषण तहनो होइत छल ओ एखनो होइत अछि। वर्तमान समयमे स्थिति आओर गंभीर भऽ गेल अछि, बेटी अपन मायक गर्भमे सुरक्षित नहि रहि गेल अछि, जखन कि बच्चा सब सऽ बेसी सुरक्षित ओतहि रहैत अछि। जखन माये ओकर सबसँ बड़का दुश्मन भऽ जाइत अछि, तँ आनकें की कऽ सकैत अछि? परिस्थितिजन्य आइयो कतेको गुलाब, चम्पा, चमेली, बेली, जूही, अड़हुल असमये आगीमे अपनाकें समर्पित कऽ लैत अछि।

निष्कर्ष:

एहि उपन्यास मध्य स्त्रीक जीवनक विभिन्न बिन्दुकें ओ ततेक सूक्ष्मता–गहनता ओ संवेदनशीलताक संग उतारलनि अछि जे पुरुष जीवकान्तक आत्मा स्त्रीभावसँ परिपूरित बुझाइत अछि, एकात्म भ' गेल अछि। एतय स्त्रीक मनोभाव ओकर चेतना, अस्मिता, अस्तित्व, शोषण–संघर्ष, जय–पराजय आदि अभिव्यक्त भेल अछि। आदिकालसँ पुरुष प्रधान समाजमे नारीकें भोगक वस्तु बुझल जाइत अछि, ओकर अधिकार, अस्मिताक दोहन होइत रहल अछि, एतय जीवकान्त आवाह्न करैत छथि स्वतंत्र देशक नवयुवती लोकनि सऽ जे आत्मनिर्भर बनु आ अपन रक्षा, उत्तरदायित्व लेल स्वतः उत्तरदायी होयबाक प्रतिज्ञा करू।

संदर्भ–सूची:

1. जेना कोनो गाम होइत अछि, संकलन आ संपादन– प्रदीप बिहारी, प्रकाशक– चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय, संस्करण– 2015, पृ.– 117
2. तत्रैव, पृ.– 119
3. तत्रैव, पृ.– 131
4. तत्रैव, पृ.– 136
5. तत्रैव, पृ.– 132
6. तत्रैव, पृ.– 137
7. आधुनिक मैथिली साहित्य इतिहास, लेखक–देवकान्त झा, प्रकाशक–साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2017, पृ०– 197